!! श्री हनुमान चालीसा !!

दोहा

श्रीगुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरणऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥१॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवनकुमार। बल बुद्धि बिद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार॥२॥

चौपाई

श्रीगुरु चरण सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि। बरणऊँ रघुबर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥१॥

बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवनकुमार। बल बुद्धि बिद्या देहु मोहि, हरहु कलेस बिकार॥२॥

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर॥३॥

राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि पुत्र पवन सुत नामा॥४॥

महावीर विक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी॥५॥

कञ्चन बरण बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुञ्चित केसा॥६॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँप मुण्डल कुंडल ब्रजै॥७॥

शंकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग वंदन॥८॥

विद्यावान गुणी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर॥९॥

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया॥१०॥

सूक्ष्म रूप धरी सियहिं दिखावा। विकट रूप धरि लंक जरावा॥११॥

भीम रूप धरि असुर सञ्हारे। रामचंद्र के काज सवारे॥१२॥

लाय सञ्जीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये॥१३॥

रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहिं सम भाई॥१४॥

सहस बदन तुम्हरो जस गावै। अस कहि श्रीपति कंठ लगावै॥१५॥

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा॥१६॥

यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कवि कोविद कहि सकैं कहाँ ते॥१७॥

तुम उपकार सुग्रीवहिं कीहिं। राम मिलाय राज पद दीहिं॥१८॥

तुम्हरो मंत्र विबीषण माना। लंकेश्वर भए सब जग जाना॥१९॥

युग सहस्र योजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥२०॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥२१॥

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते॥२२॥

राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥२३॥

सब सुख लहै तुम्हारी शरणा। तुम रक्षक काहू को डर ना॥२४॥

आपन तेज सम्हारो आपै तीनों लोक हांक ते कापै॥२५॥

भूत पिशाच निकट नहीं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै॥२६॥

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा॥२७॥

संकट तें हनुमान छुडावै। मन क्रम वचन ध्यान जो लावै॥२८॥

सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा॥२९॥

और मनोरथ जो कोई लावै। ता सुमिरिहं बल बुद्धि बिशेषै॥३०॥

जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं॥३१॥

जो शत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई॥३२॥

जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥३३॥

तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय महं डेरा॥३४॥

दोहा

पावन तनय संकट हरण। मंगल मूरति रूप। राम लखन सीता सहित। हृदय बसहु सुर भूप॥३५॥

श्री हनुमान चालीसा कीजै। श्री सीता रामचंद्र जी की जै।।